IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समकालीन परिस्थितियों की उपज : सफदर हाशमी की 'मशीन'

आराधना साव, नेट/जेआरएफ़

शोधार्थी, हिन्दी विभाग

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय

कोलकाता

शोध-सार - किसी भी समयकाल में लिखा गया साहित्य अपनी समकालीन परिस्थितियों से भी प्रभावित होता है । मगर सफदर हाशमी कृत 'मशीन' नुक्कड़ नाटक का आधार और कारण ही समकालीन परिस्थिति रही । समकालीन परिस्थितियों ने 'मशीन' की रचना में उत्प्रेरक का कार्य किया । इसी उत्प्रेरक परिस्थिति और 'मशीन' रचना के बीच के अंतर्संबंध की पड़ताल इस शोध-पत्र में की गई है एवं 'मशीन' रचना में समकालीन परिस्थितियों के महत्व का आकलन किया गया है ।

मूल-शब्द - मशीन, आपातकाल, सरकार, मजदूर, यूनियन, शोषण, रंगमंच ।

2 दिसंबर 2019 को भोपाल गैस त्रासदी के 35 साल पूरे हो गए मगर उस काले दिन को आज भी लोग भुला नहीं पाये हैं । उद्योगपति लागत, उत्पादन ,खपत और लाभ के चक्र से इतर आम जन, अपने वर्कर्स आदि के संबंध में कभी सोच नहीं पाये, ये घटना उसका प्रमाण है । फैक्टरी में उत्पादन बंद नहीं होना चाहिए, चाहे फैक्टरी में काम करने वालों के लिए फैक्टरी की स्थिति जानलेवा ही क्यों न हो । ऐसी ही एक सामयिक घटना 'मशीन' नाटक का आधार बना । जन नाट्य मंच की अन्य राजनीतिक नुक्कड़ नाटकों की तरह ही 'मशीन' का आधार भी 1978 के अंतिम महीने का एक सामयिक मजदूर मुद्दा बना, जिसने दिल्ली के साथ - साथ पूरे देश को झकझोर दिया था ।

उस समय 18 महीने की आपातकाल ने सत्ता के खिलाफ असहमति रखने वाले सभी आवाज़ों को बुरी तरह कुचल दिया था । विपक्ष के नेताओं को या तो जेल में डाल दिया गया था या फिर वे अंडरग्राउंड हो गए थे । किसी भी फैक्टरी में ट्रेड यूनियनों की किसी भी प्रकार की कार्यकलापों की अनुमति नहीं थी और जो ट्रेड यूनियनें मौजूद थी, उसे उग्र आपातकालीन शासन ने खत्म कर दिया था । 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के उस न्यायिक फैसले को मानने से इंकार कर दिया था, जिसमें उन्हें प्रधानमंत्री के पद से इस्तीफा देने के लिए कहा गया था । इसके कुछ दिन बाद ही इन्दिरा गांधी ने देश में आपातकाल की घोषणा कर दी थी । इस पर सफदर हाशमी के जनम(जन नाट्य मंच) ने 'कुर्सी, कुर्सी, कुर्सी' नाम से एक व्यंग नाटक प्रस्तुत किया था । लेकिन आपातकाल के दौरान जनम के अधिकांश सदस्यों का यहाँ-वहाँ निर्वासितों की तरह रहने के कारण जनम पूरी तरह से निष्क्रिय और तितर-बितर हो गया था । यद्यपि सफदर हाशमी अपने रंगमंचीय कार्यकलापों के शुरुआती दिनों में पूरी तरह से राजनीतिक नहीं थे, लेकिन बाद में उनका राजनीतिक परिप्रेक्ष्य एवं प्रतिबद्धता आपातकाल के दौरान हुए क्रूर अत्याचार के कारण भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) से जुड़ गयी, जिसके वे मृत्यु पर्यंत(1989) सक्रिय सदस्य रहे । वस्तुतः जनम के नाटक और अधिक राजनीतिक होने लगे , हालांकि ये नाटक ट्रेड यूनियनों के मंचों के अलावा किसी और पार्टी के मंच पर प्रदर्शित नहीं होती थी ।

आपातकालीन शासन की राजनीतिक हार के बाद धीरे-धीरे सभी क्षेत्रों में फिर से गतिविधियां सामान्य होने लगी, खासतौर पर ट्रेड यूनियन के मोर्चों पर । फैक्टरियों में फिर से ट्रेड यूनियन बनाने के लिए अत्यधिक ज़ोर लगाया गया । दूसरी तरफ, बड़े उद्योगपति और फैक्टरियों के मालिक अब भी प्रतिरोध कर रहे थे क्योंकि वे आपातकाल के दौरान मिले तोहफों को छोडने को तैयार नहीं थे जिसमें मजदूरों का दमन, यूनियन गतिविधियों से जुड़े होने के मात्र संदेह में उन पर तुरंत गोली चला देना, काम की अवधि बढ़ा देना और मजदूर-मुद्दों में सरकार की मध्यस्थता के कारण मिल मालिकों को मिली पूरी सुरक्षा शामिल थी । यहाँ तक की नयी जनता पार्टी की सरकार के सत्ता में आने के बाद भी उद्योगपति आपातकाल से मिली आरामदायक विरासत को छोडने को तैयार नहीं थे । नयी सरकार का मजदूर मुद्दों में पुलिस को शामिल करने से इंकार करना, मिल और फैक्टरियों के मालिकों को सुरक्षा कर्मी के नाम पर अपनी फौज गठित करने के लिए प्रेरित किया । इन सुरक्षा कर्मियों को न सिर्फ लाठियाँ प्रदान की गयी बल्कि उन्नत बंदूकें भी थमाई गयी । इन सुरक्षा कर्मियों की मनमानी एवं मजदूरों को प्रताड़ित करने की खबरें दिल्ली एवं दूसरे औद्योगिक शहरों की भी रोजाना की घटना हो गयी ।

आपातकाल के ज़्यादतियों के झटकों के कारण अच्छी तरह से स्थापित ट्रेड यूनियन की आंदलनें अब भी अस्त-व्यस्त (असंगठित) थी । दमघोंटू राजनीतिक माहौल ने उनके कैडरों को दूर कर दिया था और सारे संपर्कों (नेटवर्क) को खत्म कर दिया था । मगर अब वे फैक्टरियों में अपनी खोई शक्ति को वापस पाने की कोशिश कर रहे थे । इसके लिए उन्हें सस्ती

एवं असरदार संपर्क माध्यम की सख्त जरूरत थी, मजदूर वर्ग तक पहुँचने के लिए । यूनियन के नेता कार्यकर्ता कलाकारों की ओर मदद के लिए उम्मीद की नजर से देख रहे थे । मगर रंगमंच के महंगे खर्चों ने कार्यकर्ता कलाकारों को ऐसे सस्ते जन संपर्क माध्यम को ढूँढने के लिए विवश कर दिया जो सस्ता हो और कहीं भी ले जाने में आसान हो और साथ ही प्रभावी भी हो । इसी की कोशिश में सफदर हाशमी एवं उनके साथियों को नुक्कड़ नाटक के रूप में प्रयोग की तरफ मोड़ा । उनका उद्देश्य रंगमंच के सस्ते ,लचीले एवं प्रभावी रूप के साथ ही समाज में लोकतान्त्रिक संस्कृति के लिए संघर्ष करने वालों को आंदोलन के लिए एक प्रभावी माध्यम प्रदान करना था । सफदर हाशमी ने अपने एक लेख में लिखा है, "नुक्कड़ नाटक को उसकी गतिशीलता ,लचीलेपन और कम ख़र्चीले होने के कारण जनपक्षीय कला का आदर्श रूप कहा जा सकता है । इसकी मदद से ठोस सांस्कृतिक गतिविधियों की पहल की जा सकती है । इसलिए यह जरूरी है कि नुक्कड़ नाटक आधारित जन नाट्य आंदोलन को बड़े पैमाने पर प्रचारित करने के काम को प्राथमिकता दी जाये ।"1 इसलिए जनम के कार्यकर्ताओं ने एक ऐसे रंगमंच की आवश्यकता महसूस की जो वर्ग तटस्थता के आडंबर के बिना सीधे जन से जुड़े । अतः वे ऐसे पाठ की खोज में जुट गए जो नुक्कड़ नाटक के लिए सटीक हो और नुक्कड़ नाटक की शुरुआत की जा सके । जब सारे प्रयास विफल हो गए तब जनम ने थोड़े संशय के साथ फैसला किया कि वे प्रस्तुति के लिए स्वयं नाटक लिखेंगे ।

कार्यकर्ताओं की रंगमंचीय निर्माण की स्थिति कमजोर होने के कारण राजनीतिक नुक्कड़ रंगमंच का विकास करना उनके समक्ष एक बड़ी चुनौती थी । उनकी राजनीतिक नुक्कड़ नाटक की अवधारणा अभी प्रारम्भिक ही थी । लेकिन राजनीतिक और आर्थिक दबाव ने उनको इसपर विचार करने के लिए उत्साहित किया । नाटक के विषयवस्तु को लेकर उन्हें कोई उलझन नहीं थी क्योंकि उन्होने सोच लिया था कि नाटक का विषय सर्वहारा समर्थक और शोषणकर्ता औद्योगिक पूंजीवाद के खिलाफ होगा । उन्होने इस नए विषय-वस्तु को नए रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता महसूस की । इस तरह 1978 से जनम के राजनीतिक नुक्कड़ नाटकों ने इसी विषय-वस्तु को प्रस्तुत किया ।

आपातकालीन स्थापनाओं को झटका देने के लिए लोगों ने बड़ी उत्साह के साथ केंद्र के लिए नयी सरकार को वोट दिया । लेकिन कुछ ही समय के बाद यह सरकार भी मजदूर विरोधी एवं किसान विरोधी साबित हुई । सरकारी नियंत्रण से मुक्त निजी उद्योग के विकास को छूट देने की सरकार की पक्षपातपूर्ण नीति के साथ ही नई सरकार ने यह घोषणा कर दी कि वह व्यवस्था और यूनियनों के बीच के औद्योगिक झगड़ों में बीच-बचाव नहीं करेगी । मजदूरों द्वारा फैक्टरियों में अमानवीय कार्य स्थितियों में सुधार की मांग भी व्यर्थ हो गया । मजदूरों की हड़तालें फैक्टरी मालिकों के सुरक्षा कर्मियों द्वारा काबू किया गया । इन्हीं में से एक घटना दिल्ली के बाहरी इलाके के एक केमिकल फैक्टरी की है जहां के मजदूरों ने हड़ताल कर दिया था एवं वहाँ की क्रूर व्यवस्था उनकी दो साधारण मांगों को मानने से लगातार इंकार कर रही थी ।

दरअसल, फैक्टरी के अधिकतर मजदूर फैक्टरी में काम करने के लिए 15-20 किलोमीटर दूर से साइकिल से आते थे । उनकी मांग थी कि फैक्टरी परिसर में एक साइकिल स्टैंड की व्यवस्था की जाए । दूसरी मांग वे फैक्टरी में एक कैंटीन की कर रहे थे, जहां वे एक कप चाय पी सके और दोपहर की अपनी रोटी खा सके । जब इन दो साधारण मानवीय मांगों को प्रबंधन ने मानने से इंकार कर दिया तब मजदूरों ने फैक्टरी के गेट पर हड़ताल शुरू कर दिया । जिसके फलस्वरूप साधारण उकसावे पर सुरक्षा कर्मियों ने हड़ताल कर रहे मजदूरों पर गोलियां चला दी जिसमें 6 मजदूर मारे गए । यह नृशंसता आपातकालीन अत्याचारों से किसी भी तरह कम नहीं थी । प्रबंधन के इस क्रूरतम व्यवहार के खिलाफ पूरी दिल्ली के मजदूरों ने आंदोलन शुरू कर दिया । सीपीआई(एम),दिल्ली के तत्कालीन सचिव जोगिंदर शर्मा ने यह घटना सफदर हाशमी एवं उनके साथियों को सुनाया और इसपर एक नाटक लिखने का सुझाव दिया । सफदर और उनके साथियों की वर्ग-चेतना, सर्वहारा वर्ग के संघर्षों की पहचान ने उनकी कलात्मक प्रतिभा को जगाया और उन्होने तुरंत इस घटना का नाट्यरूपांतरण करने का फैसला किया ।

एक और राजनीतिक घटना ने इस प्रस्तावित योजना को गति देने का कार्य किया । तत्कालीन नई सरकार जो आपातकाल के विरोध के लहर में सत्ता में आई थी, वह भी मजदूर विरोधी कदम उठाने लगी । जनता सरकार ने तेज राजनैतिक कार्यकलापों और औद्योगिक गड़बड़ियों को जोड़ने के लिए नव औद्योगिक संपर्क बिल (New Industrial Relation Bill) फिर से लाने का फैसला किया । यह वह बिल था जो देश के सारे ट्रेड यूनियनों के आंदोलनों के भविष्य को प्रभावित करता । हाशमी ने इस बिल के संबंध में लिखा है - "जनता सरकार नई औद्योगिक बिल लाने की कोशिश कर रही है ,वैसा ही जो काँग्रेस सरकार पहले लाने की कोशिश की थी मगर लोगों के विरोध के कारण लाने में असफल रही । अब वैसा ही लोक विरोधी बिल तैयार किया जा रहा है । इस बिल का सार यह था कि स्थानीय सरकार को ट्रेड यूनियनों का सामना करने के लिए ढेर सारा अधिकार दे दिया गया था और उन्हें किसी मामले के बढ़ने से पहले उनको गिरफ्तार करने का भी अधिकार मिल गया था । मजदूरों के कई लोकतान्त्रिक अधिकार छीन लिए गए । परामर्श ढांचा तोड़ दिया गया और औद्योगिक बातचीत का नामोनिशान मिट गया । लेबर डिस्पीउट ट्रिब्यूनल्स हटा दिये गए । हम नई बिल और केमिकल फैक्टरी की घटना को मिलाने की कोशिश कर रहे थे ।"2

जनम का पहला सम्पूर्ण नुक्कड़ नाटक 'मशीन' का मंचन इन्हीं सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं के कारण 1978 के नवम्बर में हुआ । आपातकाल एवं उसके बाद नुक्कड़ नाटकों के विकास के संबंध में हृषिकेश सुलभ ने लिखा है, "देश की जनता विषमताओं और राजनीतिक क्रूरताओं से तबाह और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के हनन से बेचैन थी । इस तबाही और बेचैनी ने अभिव्यक्ति की हमारी लोक परंपरा की इस विधा(नुक्कड़ नाटक) का पुनराविष्कार किया ।"3 वस्तुतः 'मशीन' नुक्कड़ नाटक का पहला मंचन 19 नवंबर 1978 में दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में लगभग

7000 दर्शकों के बीच हुआ । वहाँ ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधि प्रस्तावित औद्योगिक रिलेसंस बिल (Industrial Relations Bill) का विरोध करने के लिए इकट्ठा हुए थे । केवल जनम के कार्यकर्ताओं के दृढ़ निवेदन के कारण यूनियन लीडरों ने यूनियन अधिवेशन के अंत में नाटक की प्रस्तुति की अनुमति दे दी थी ।

'मशीन' के सफल मंचन के पश्चात इसने पूरे भारत में सनसनी मचा दी, खासकर शहरी फैक्टरी के मजदूरों के बीच । वे मशीन को आसानी से अपने जीवन के विभिन्न पक्षों से जोड़कर देख पा रहे थे । नाटक की शुरुआत इस प्रकार होती है - ''चारों ओर दर्शक । बीच में गोलाकार अभिनय-स्थल । एक-एक करके पाँच अभिनेता ताल में चलते हुए आते हैं और मिलकर यांत्रिक अंदाज़ में हाथ-पैर हिलाकर मुंह से मशीन के चलने की आवाज़ निकालते हुए मशीन का अभिनय करते हैं । कुछ देर चलकर मशीन ताल में रुक जाती है ।''4

दरअसल 'मशीन' भारत में पूरे औद्योगिक व्यवस्था (setup) का रूपक है । साधारण दर्शकों के लिए यह मात्र एक उपकरण है, अचेतन और शून्य । फैक्टरी में काम करने वाले श्रमिकों के लिए यह शोषणकारी औद्योगिक पूंजीवाद का रूपक है जहां उनकी भूमिका की अनदेखी की जाती है । एक फैक्टरी के मालिक के लिए मशीन एक सोने की खान का रूपक है जहां से वह कम से कम लागत में अधिक से अधिक मुनाफा कमा सकता है । सफदर हाशमी ने अपने एक साक्षात्कार में कहा था , ''The image of a machine was born that we wanted to use as a metaphor for the system. The different components of the machine would be the worker, the guard and the owner. Each one of them would talk about their relationship with the machine. We would then show how together they made the machine work and how this collaboration was experienced by the worker, the guard and the owner.''5

मशीन के तीन बड़े अंग : मजदूर ,मालिक एवं रक्षक एक पूंजीवादी समाज में उनके पारस्परिक संबंध को दर्शाता है । पूरी व्यवस्था में अपने लिए थोड़ी सी बेहतरी की आशा रखने वाले मजदूर हमेशा शोषित होते हैं । मालिक अपनी सर्वशक्तिमान पूंजी की ताकत से मजदूरों को निचोड़ता है ताकि उसे ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके । तीसरा अंग, रक्षक, मजदूरों और मालिकों के बीच एक परजीवी है । उसकी उपस्थिती पूंजीवादी रुचि की सुरक्षा के लिए नियम एवं क़ानूनों की व्यवहारिकता का प्रतीक है जो मजदूरों के किसी भी लोकतान्त्रिक अधिकार को मार सकता है या हनन कर सकता है । उसकी भुजाओं की ताकत व्यवस्था की ताकत होती है । रक्षक उद्योग को सुचारु रूप से चलाने के लिए उसे चमकाता है ।

इस पूरी व्यवस्था में मजदूरों की महत्ता एक मशीन से अधिक कुछ भी नहीं है । मशीन जिस तरह बिना थके, बिना किसी मांग के बस चुपचाप चलते रहता है, चलाने वाले की हाथ से, उसी प्रकार एक मालिक भी अपने मजदूर से यही उम्मीद करता है कि बस वह चुपचाप चलता रहे, बिना थके और बिना किसी मांग के और उसे लाभ मिलता रहे । लियो टोल्स्टोय अपनी किताब 'मालिक और

मजदूर' में मजदूरों या श्रमजीवियों की दयनीय स्थिति को इन शब्दों में स्पष्ट करते हैं, "खाने-पीने की तमाम सामग्री और संसार की समस्त चीजें, जिनपर मनुष्यों का जीवन निर्भर है और जिनसे लोग अमीर बने हुए हैं, श्रमजीवी पैदा करते हैं । किन्तु वे जो कुछ पैदा करते हैं उसका लाभ वे स्वयं नहीं उठाते, राज्यकर्त्ता और धनवान उसका फायदा उठाते हैं । इसके विपरीत श्रमजीवी हमेशा गरीबी, अज्ञान और गुलामी के शिकार बने रहते हैं । और उनको उन्हीं लोगों के हाथों अनादर सहन करना पड़ता है, जिनके लिए वे भोजन, वस्त्र और अन्य सुख-साधन सुलभ करते हैं ।"6 और जो श्रमजीवियों के श्रम का फायदा उठाते हैं, उनके संबंध में टोल्स्टोय लिखते हैं, "इसके विपरीत श्रमजीवियों पर शासन करने वालों का एक अल्प समुदाय, जो उनके उत्पादन से लाभ उठाता है, आलस्य और भोग-विलास का जीवन बिताता है और करोड़ों के परिश्रम को बेकार और अनीतिपूर्वक बर्बाद करता है ।"7 'मशीन' में मजदूर और मजदूरों की मेहनत का लाभ उठाने वाले उपर्युक्त अल्प समुदायों की उपर्युक्त स्थिति की झलक साफ दिखाई देती है ।

हबीव तनवीर के अनुसार, मशीन शोषित मजदूर वर्ग के बारे में एक अमूर्त शिक्षाप्रद नाटक है जिसके अर्थ को पूरी तरह से स्पष्ट नहीं किया जा सकता है । सफदर हाशमी ने कलाकारों की सहायता से चेतन को अचेतन रूप में प्रस्तुत किया । उन्होने मशीन का रंगमंचीय प्रयोग करके दर्शकों को उससे जुड़ाव महसूस कराने में सफलता प्राप्त की और उन्हें किसी प्रकार के प्रतीकात्मक अंधेरे में नहीं रखा । मशीन की छवि एक अविभाज्य अंग है , खासकर शहरी मजदूर वर्गों की ज़िंदगी में । मशीन के किसी भी भाग की एक मरोड़ती आवाज़ ही मजदूर वर्गों के लिए काफी होगी ,इसे पहचानने के लिए और इसे अपने अनुभव से जोड़ने के लिए। भीष्म साहनी जी ने 'सफदर- सफदर हाशमी का व्यक्तित्व और कृतित्व' नामक पुस्तक की भूमिका में लिखा है, "नुक्कड़ नाटक उपदेशक की भूमिका नहीं निभाता है । वह जन साधारण के बीच से निकली हुई जन साधारण की ही आवाज़ है । कलाकार और दर्शकों की भूमिका यहाँ अलग-अलग नहीं रहती । दोनों एक दूसरे के बहुत निकट आ जाते हैं, बल्कि नाटक उन्हीं के बीच जा पहुंचता है ,और इस तरह दर्शक भी मात्र दर्शक न रहकर उस नाटक का अंग बन जाता है, दोनों के बीच की विभाजन रेखा मिटने लगती है, अभिनेता उन्हीं में से निकला हुआ व्यक्ति बन जाता है ।"8 सफदर हाशमी की कोशिश 'मशीन' नाटक के प्रस्तुति के पीछे यही थी कि शोषित मजदूर वर्ग अपने को उससे जोड़कर देखे और अपने प्रति हो रहे अन्याय के प्रति जागरूक हो और आवाज़ उठाए । गिरीश रस्तोगी ने लिखा है, "नुक्कड़ नाटक का संबंध स्वभावतः राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक स्थितियों से, आम आदमी के प्रति अन्याय और अत्याचार करनेवाली जन-विरोधी शक्तियों के घृणित रूप और कृत्यों से, उन्हें भेदनेवाली अटूट इच्छा से जुड़ता गया ।"9 और यही सफदर हाशमी की सफलता मानी जा सकती है । उनकी हत्या उनके उद्देश्य की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण है ।

अतः 'मशीन' भले ही तत्कालीन घटनाओं की उपज हो मगर उसकी प्रतीकात्मकता उसे कालजयी बनाती है ।लेकिन यह भी सच है कि वह तत्कालीन घटना न घटित होती तो शायद मशीन भी न लिखी गई होती । मशीन की रचना में तत्कालीन घटना ने एक मजबूत उत्प्रेरक का कार्य किया है

जिसे अनदेखा करके मशीन नुक्कड़ नाटक को पूरी तरीके से समझा नहीं जा सकता है । शोषक और शोषित की स्थिति समाज में आज भी वही है । आज सिर्फ मजदूर वर्ग ही नहीं बल्कि आम जन भी एक मशीन की भांति ही बस चले जा रहे हैं, कहाँ जाना है, कहाँ पहुँचना है, कुछ पता नहीं । कोई ऑफिस में तो कोई मिल में, बस मशीन की तरह चलते जा रहे हैं । उनकी मजबूरी है, चलना । अपनी मेहनत से मुनाफा बढ़ाने वालों का मुनाफा पर कोई अधिकार नहीं होता है । मशीन का काम है चुपचाप चलना और उत्पादन करना । उत्पादन बेचकर लाभ कमाने वाला बस मालिक हो सकता है क्योंकि उसका पूंजी पर अधिकार है और इसलिए वह श्रम पर भी अपना अधिकार समझ बैठता है और फिर शुरू होता है शोषण का अंतहीन क्रम । इस क्रम में मालिक श्रम पर अधिकार समझते-समझते श्रमजीवी के प्राणों पर भी अपना अधिकार समझने लगता है, इसलिए कल-कारखानों की जानलेवा स्थितियों में भी वे मजदूरों को काम करने पर विवश करते हैं और इस क्रम में मजदूरों को बहुत बार अपने प्राण गँवाने पड़ते हैं, जैसा कि भोपाल गैस त्रासदी या उपर्युक्त परिस्थितियों में हुआ था । 'मशीन' नुक्कड़ नाटक इस पूरे उपक्रम को समेटकर हमारे समक्ष रखती है ।

<u>संदर्भ-ग्रंथ</u>

1. हाशमी सफदर.(1989). नुक्कड़ नाटक का महत्व और कार्य-प्रणाली,सफदर- सफदर हाशमी का व्यक्तित्व और कृतित्व.राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली. पृ॰- 34 ।

2. Hashmi safdar.(1989).The Right to perform,Selected writings of Safdar Hashmi.Sahmat,Delhi.pg.no.-160 .

3. सुलभ हृषीकेश.(2009).रंगमंच का जनतंत्र.राजकमल प्रकाशन.पृ.240

4. हाशमी सफदर.(2011).मशीन,सरकश अफसाने.जन नाट्य मंच.पृ.9

5. Hashmi safdar.(1989).The Right to perform, Selected writings of Safdar Hashmi.Sahmat, Delhi.pg.no.- 160 .

6. टोल्स्टोय लियो, मालिक और मजदूर,अनुवादक-शोभालाल गुप्त, सर्वोदय साहित्य मंदिर,हैदराबाद, द्वितीय संस्करण-1948,पृ. 63

7. वही, पृ. 64

8. साहनी भीष्म.(1989).सफदर- सफदर हाशमी का व्यक्तित्व और कृतित्व. राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली. पृ॰- 13 ।

9. रस्तोगी गिरीश.(2004).बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच. भारतीय ज्ञानपीठ. पृ॰-143 ।